आरती चिन्तपूर्णी देवी जी की

चिन्तपूर्णी चिन्ता दूर करनी,
जन को तारो भोली मां ।
काली दा पुत्र पवन दा घोड़ा,
सिंह पर भई असवार भोली मां ।।१।।
एक हाथ खड़ग दूजे में खंडा,
तीजे त्रिशुल संभाले, भोली मां ।।२।।
चौथे हाथ चक्कर, गदा पांचवें,
छठे मुण्डों दी माल भोली मां ।।३।।
सातवें से रुण्ड-मुण्ड बिदारे,
आठवें से असुर संहारे, भोली मां ।।४।।
चम्पे का बाग लगा अति सुन्दर,
बैठी दीवान लगाय भोली मां ।।५।।
हरि हर ब्रह्मा तेरे भवन विराजे,
लाल चंदोया बैठी तान, भोली मां ।।६।।
औखी घाटी विकटा पैंडा,
तले बहे दरिया, भोली मां ।।७।।
सुमर चरन ध्यानू जस गावे,
भक्तां दी पज निभाओ, भोली मां ।।८।।

विवरण

चिन्ता दूर करने वाली चिन्तपूर्णी माँ हम दास जनों का उद्धार करने वाली हैं । यह चिन्तपूर्णी माँ सिंह की सवारी करती हैं । इनके एक हाथ में खड़ग है एवं दूसरे में खंडा है तथा इस प्रेममयी माँ के तीसरे हाथ में त्रिशूल रहता है ।

चौथे हाथ में इनके चक्र रहता है एवं पाँचवे हाथ में गदा रहता है । इनके छठें हाथों में मुण्डों की माला रहती है । इन्होंने अपने सातवें हाथ

से रुण्ड - मुण्ड नामक राक्षसों का विनाश किया तथा इस भोली माँ ने अपने आठवें हाथ से अनगिनत राक्षसों का वध किया ।

चम्पा के फूलों का बागीचा लगाकर और उसमें आसन लगाकर माँ बैठी हैं । लाल चुनरी पहनकर ये माता बैठी रहती हैं तथा इनके दरबार में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश भी विराजते रहते हैं । आपके पैरों के नीचे दरिया बहती रहती है । हे माता ! हम आपका मन से भजन एवं ध्यान करते हैं, आप हमें अपनी भक्ति का आर्शीवाद दे दो ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.